International Journal for Multidisciplinary Research
International Conference on Multidisciplinary Research & Studies 2023
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

जगातील वेद, उपनिषदांचा अभ्यास

शिल्पा गिरीश कानसकर

संस्कृत अध्यापिका, स्कुल ऑफ स्कॉलर्स, यवतमाळ

प्रस्तावना :

भारत के इतिहास में संस्कृत साहित्य की अनमोल धरोहर प्राप्त रही है। इसमें धार्मिक, नैतिक, वैज्ञानिक, मनोरंजक ललित राष्ट्रीय जैसे, विभिन्न प्रकार के वाङ्मय पहले से ही संस्कृत भाषा मे विद्यमान है | विश्वभर की समस्त प्राचीन भाषाओं में संस्कृत का सर्वप्रथम और उच्च स्थान है |

विश्व साहित्य की पहली पुस्तक ऋग्वेद इसी भाषा का दैदीप्यमान रत्न है। भारतीय संस्कृति का रहस्य इसी भाषा में निहित है। संस्कृत का अध्ययन किये बिना भारतीय संस्कृति का पूर्ण ज्ञान सम्भव नहीं है। संपूर्ण भारतीय संस्कृति, परंपरा और महत्वपूर्ण राज इसमें निहित है। संस्कृत भाषा से ही कई भारतीय भाषाओं की उत्पत्ति हुई है। इसिलिए संस्कृत भाषा को भारतीय भाषा की जननी कहाँ गया है।

संस्कृत साहित्य में याज्ञवल्कय स्मृति ज्ञान के चौदह सुक्तों का उल्लेख है। वेद, वेदांग, पुराण, न्याय मीमांसा और धर्मशास्त्र.

“पुराणन्याय मीमांसा धर्मशास्त्रांग मिश्रिताः ।
वेदाः स्थानानि विद्यानां धमस्य च चतुर्दश ।।”

संस्कृत साहित्य में वेद और उपनिषद आदि का अध्ययन निचे दिया गया है।

'वेद' शब्द का अर्थ :

‘वेद’ शब्द का अर्थ 'ज्ञान' है। यह शब्द संस्कृत के मूल ‘विद्’ धातु से घञ् प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है ‘जानना’ । यह साहित्य के एक विशाल कोष को दर्शाता है। वेद का दुसरा नाम ‘श्रृती’ अर्थात श्रवण करना होता है। यह मुख्य रूप से मौखिक - कर्ण विधि का उल्लेख करता है। महान वैदिक टीकाकार सायण ने वेद की परिभाषा दी है -

“इष्ट प्राप्ति - अनिष्ट - परिहारयोः यो लौकिकम्-
उपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेदः |”

अर्थात - इष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट का परिहार जिस ग्रन्थ के माध्यम से होता है।

वेद का महत्त्व :

1) वेद उपलब्ध ग्रन्थों में सबसे प्राचीन, सर्वप्रथम एवं सर्वस्वीकृत ग्रन्थ है |
2) संस्कृत भाषा में गद्य और कविता के रूप में वेद, को सर्वोपरि ज्ञान माना गया है।
3) हिन्दुओं के धर्म एवं संस्कृति का मूल आधार वेद है | वर्तमान में भी उनकी पूजा, आराधना, विधि, संस्कार एवं दृष्टिकोण वेद से प्रभावित है।
4) वेद मे उच्चतम आध्यात्मिक ज्ञान (परा विद्या) के साथ-साथ दुनिया का ज्ञान (अपरा विद्या) भी शामिल है ।

5) वेद अपनी पवित्रता और निर्मलता में अद्वितीय है |

वैदिक साहित्य का वर्गीकरण :

मुख्य रूप से वैदिक साहित्य दो श्रेणियों में रखा गया है - (1) वेद, (2) वेदांग |

'वेद' चार वेदों को प्रदर्शित करने वाला एक सामूहिक शब्द है।

1) ऋग्वेद
2) यजुर्वेद
3) सामवेद
4) अथर्ववेद

वेद तथा वेद को समझने के लिए बाद में ऋषियों द्वारा जो ग्रन्थ रथे गए उन सभी को वैदिक संहिता के अन्तर्गत माने जाते है | इस प्रकार वैदिक संहिता को चार भागों में बाँटा गया है |

1) संहिता
2) ब्राह्मण
3) आरण्यक
4) उपनिषद्

संहिता में वे चारो मूल वेद आते है (ऋवेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद), जो किसी ऋषी अथवा मनुष्य नही रचे गए है। अपितु परमात्माकृत है | कालान्तर में इन चारो वेदों की अलग-अलग शाखाएँ है | इनके नाम निम्नलिखित है।

- संहिता - ऋग्वेद की शाखाएँ : 1) शाकल, 2) बाष्कल, 3) आधलायन, 4) शांखायन, 5) माण्डूकायन |

यजुर्वेद की शाखाएँ :

1) माध्यन्दिन २) काव्य ३) कठ
4) कपिष्ठल 5) तैत्तिरीय 6) मैत्रायणी

सामवेद की शाखाएँ :

1) कौथमीय, 2) राणायनीय, 3) जैमिनीय

अथर्ववेद की शाखाएँ :

1) पिप्पलाद २) शौनक 3) मोदमहाभाष्य 4) स्तौद
5) जाजल 6) जलद 7) ब्रह्मवैद्य 8) चारणवैद्य
9) देवदर्श

- ब्राह्मण :

अ) ऋग्वेद - ऐतरेय कौषीतकि (शांखायन)
i) शुक्ल यजुर्वेद - शतपय ब्राह्मण
ii) कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय ब्राह्मण

ब) सामवेद - ताडण्य (पंचविश), षडविधान, आर्षेय, देवताध्याय, उपनिषद (मन्त्र, ब्राह्मण),

संहितोपनिषद, वंश ब्राह्मण

क) अथर्ववेद - गोपथ ब्राह्मण

संहिता के वेद के अनुसार चार भेद है :

1) ऋग्वेद संहिता :

ऋवेद को विश्व साहित्य में सबसे प्राचीन ग्रन्थ माना जाता है | ऋग्वेद में ऋचाओं का संग्रह है, जिनकी उत्पत्ती विराट पुरुष मुख से हुई है |

2) यजुर्वेद संहिता :

यजुर्वेद का प्रतिपाद्य विषय कर्मकाण्ड है। तथा इसके मुख्य देवता वायु है। यजुर्वेद के शुक्ल यजुर्वेद व कृष्ण यजुर्वेद नामक दो भाग हो जाते है। यजुर्वेद में यजुषों का संग्रह है।

3) सामवेद संहिता :

सामवेद का ऋत्विक 'उद्गाता' तथा देवता सूर्य है। सामन् का शाब्दिक अर्थ है 'गान'। सामवेदीय मन्त्र जब विशेष गानपद्धती से गाये जाते है, तो उनको 'साम' कहाँ जाता है। सामवेद का प्रमुख विषय 'उपासना' है। सामवेद को दो भागों मे विभक्त किया गया है - 1) पूर्वार्चिक, 2) उत्तरार्चिक |

4) अथर्ववेद संहिता :

अथर्ववेद का ऋत्विक 'ब्रह्म' है। अर्थवन ऋषी के के नाम पर इस वेद का नाम अथर्ववेद पड़ा। इसके देवता 'सोम' तथा आचार्य सुमन्तु है | अथर्ववेद के उपवेद भी माने जाते है – 1) सर्पवेद, 2) विशाचवेद, 3) असूरवेद, 4) इतिहास वेद, 5) पुरणवेद आदि।

- आरण्यक :
  - i) ऋग्वेद - ऐतरेय शांखायन (कौशीतकि)
  - ii) शुक्ल यजुर्वेद - बृहदारण्यक
  - iii) कृश्ण यजुर्वेद - तैत्तरीय
- उपनिषद :
  - i) ऋग्वेद - ऐतरेय शांखायन (कौशीतकि)
  - ii) शुक्ल यजुर्वेद - ईशोपनिषद, बृहदारण्यकोपनिषद्
  - iii) कृश्ण यजुर्वेद - तैत्तरीय, कढ, श्रेताश्वतर, मैत्रायणि, महानारायण
  - iv) सामवेद - छांदोग्य केनोपनिषद्
  - v) अथर्ववेद - प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य

उपरोक्त उपनिषदें चारों वेदों के आधार पर है | परन्तु इनमें से कुछ ही उपनिषदे वर्तमान में उपलब्ध होते है, वे निम्नलिखित है।

ईश-केन-कंठ-प्रश्न-मुण्ड-माण्डूक्य-तित्तिरि: |
एतरेयं च छांदोग्यं बृहदारण्यकं दश ||

1) ईश 2) केन ३) कठ 4) प्रश्न 5) मुण्डक, 6) माण्डूक्य

7) एतरेय 8) तैतरीय 9) छांदोग्य 10) बृहदारण्यक 11) श्वेताश्वतर

हिंदू धर्म के महत्त्वपूर्ण श्रुति धर्मग्रन्थ है | ये वैदिक वाङ्मय के अभिन्न भाग है। ये संस्कृत भाषा में लिखे गये है। इनकी संख्या लगभग 108 है। किन्तु मुख्य उपनिषद 13 है। हर एक उपनिषद किसी वेद से जुड़ा हुआ है।

उपनिषदों में कर्मकाण्ड को 'अवर' कहकर ज्ञान को इसलिए महत्व दिया गया कि ज्ञान स्थूल (जगत् और पदार्थ) से सूक्ष्म (मन और आत्मा) की ओर ले जाता है | ब्रह्म जीव और जगत् का ज्ञान उपनिषदों की मूल शिक्षा है। भगवद्गीता तथा ब्रह्मसूत्र उपनिषदों के साथ मिलकर वेदान्त 'प्रस्थानत्रयी' कहलाते है। भारत की समग्र दार्शनिक चिन्तनधारा का मूल स्त्रोत उपनिषद-साहित्य ही है। उपनिषदों के तत्त्वज्ञान और कर्तव्यशास्त्र का प्रभाव भारतीय दर्शन के अतिरिक्त धर्म और संस्कृति पर भी परिलक्षित होता है।

उपनिषद् शब्द का साधारण अर्थ है 'समीप उपवेशन' या 'समीप बैठना' | यह शब्द 'उप', 'नि' उपसर्ग तथा 'सद्' धातु से निष्पन्न हुआ है। सद् धातू के तीन अर्थ है | विवरण - नाश होना, गति - पाना या जानना, तथा अवसादन - शिथिल होना | उपनिषदों में मुख्य रूप से 'आत्मविद्या' का प्रतिपादन है। जिसके अन्तर्गत ब्रह्म और आत्मा के स्वरूप, उसके प्राप्ति के साधन और आवश्यकता की समीक्षा की गयी है | आत्मज्ञानी के स्वरूप, मोक्ष के स्वरूप आदि अवान्तर विषयों के साथ ही विद्या, अविद्या, श्रेयस, प्रेयस, आचार्य, आदि विषयों पर भी भरपूर चिन्तन उपनिषदों में होता है।

उपनिषद् 100 से 400 ईसा पूर्व तक की समयावधि में लिखे गए थे | उपनिषदों ने अध्यात्मिक ज्ञान पर ध्यान केंद्रित किया। उपनिषद् उप (निकट) और षड (बैठना) शब्दों से बना है | 200 से अधिक उपनिषदों की खोज की गई है। प्रत्येक उपनिषद एक निश्चित वेद से जुड़ा है | 14 उपनिषद है जो सबसे प्रसिद्ध या महत्वपूर्ण है |

वेद और उपनिषद में अंतर :

वेद और उपनिषद दोनों ही हिंन्दू धर्म मे बहुत मान्यता रखने वाले ग्रंथ है। और इन्हीं पर हिंदू धर्म या कहे सनातन धर्म की अवधारणा निहित है | परन्तु कुछ लोगो का यह मानना है; जिन्हें इनके बारे में सही से नहीं पता कि वेद और उपनिषद दोनों एक ही है | लेकीन ऐसा नहीं हैं | हाँ वो बात अलग है कि उपनिषद् वेद का ही एक भाग है लेकिन दोनो अलग अलग कार्य के रूप में निहित है |

1) जैसा कि हमने बताया आपको की, वेदों से ही उपनिषद् की उत्पत्ति है | अर्थात प्रत्येक वेद चार भाग से बना है - संहिता, ब्राह्मण, अरण्यक और उपनिषद् | इससे आपको पता चल गया होगा कि वेद से उपनिषद बनता है। उपनिषद वेदों का एक हिस्सा है। और वह वेदों पर निर्भर करते हैं। लेकिन इसके विपरित वेद स्वतंत्र लरपिया है |
2) वेद का कार्य जीवन का तरीका समझाने का है, जो एक तथ्य के पीछे दार्शनिक अवधारणा की व्याख्या करना है ।

3) वेदों का कार्य ज्ञान प्राप्त करना होता है, तथा वही उपनिषदों का कार्य इसी ज्ञान को उपयोग में लाकर आखिरी मंजिल तक पहुंचने का मार्ग प्रशस्त करवाते है |
4) लिखित ग्रंथ के रूप में बात करे तो वेदों का कोई लिखित ग्रंथ नहीं है । लेकिन उपनिषदों को पुस्तकों मे लिखित रूप में पाया जाता है |
5) वेदों की अगर पढने या समझने के लिए किसी को भी पढाया जा सकता है, परंतु उपनिषद उन में गहरे दार्शनिक विचारों के कारण आसानी से नहीं पढे जा सकते है |

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप मे कहा जा सकता है कि - राष्ट्रीय साहित्य में वेद और उपनिषद् अनेक रूप से अजरामर है। यहां तक कि विदेशी साहित्य में भी वेद और उपनिषदों का नाम लिया जाता है। वेद किसे कहते है ? तथा उपनिषद किसे कहते है ? इनमें अंतर क्या है ? वेद तथा उननिषद् के रचयिता कौन है | इन सबका ज्ञान हमने प्राप्त किया | तत्पश्चात् हमने वेद के चार प्रकार और उपनिषद् के 11 भेदों का अध्ययन किया, और वेद और उपनिषद् का ज्ञान प्राप्त किया |

संदर्भ ग्रन्थ :

1. वेद और आत्मज्ञान की कुंजी – श्री अभयदेवजी शर्मा
2. वैदिक धर्म – प्रो. राशी तिवारी
3. संस्कृत साहित्य – विकिपीडिया
4. Acharya Veda - Shri Ram Sharma Acharya.